क्या ब्रह्माकुमारियाँ सचमुच भाई-बहन बनाती हैं?

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय अर्थात् ब्रह्माकुमारी संस्था को स्थापित हुए लगभग 70 वर्ष होने के बावजूद, सारे समाज में इस संस्था के संबंध में एक गलतफहमी बनी हुई है कि यह संस्था विवाहित व्यक्तियों को भाई-बहन बनाती है। ब्रह्माकुमारी संस्था के कुछ सदस्यों द्वारा परमपिता शिव की श्रीमत के गलत अनुपालन या गैर-अनुपालन के कारण समाज में यह गलत धारणा बन गई है।

ब्रह्माकुमारी संस्था के संस्थापक दादा लेखराज (उर्फ ब्रह्मा) तथा ब्रह्माकुमारियों की संभाल के लिए कुछ वर्षों के लिए माता के रूप में निमित्त बनी ऊँ राधे (सरस्वती) के जीवित रहने तक ब्रह्माकुमारी संस्था एक परिवार के रूप में थी। इस परिवार के सभी सदस्य ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाते थे तथा दादा लेखराज के शरीर में प्रवेश हुए परमपिता शिव से ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग सीखते थे। दादा लेखराज के निधन के पश्चात् इस परिवार ने एक संस्था का रूप ले लिया और माता-पिता विहीन इस परिवार के सदस्यों ने सारे विश्व में सन्यासियों की तरह ऐशोआराम के साधनों से युक्त सेवाकेन्द्र बना लिए। इन सेवाकेन्द्रों में अविवाहित बहनें गृहस्थी जिज्ञासुओं को राजयोग सिखाने का दावा करने लगीं। भक्तिमार्ग की संस्कृत गीता में भी उल्लेख है कि गृहस्थ श्रीकृष्ण ने अविवाहित भीष्म को नहीं, अपितु गृहस्थी अर्जुन को राजयोग का ज्ञान दिया था और अब इस पुरुषोत्तम संगमयुग में दादा लेखराज में प्रवेश करके चलाई गई दिनांक 20.1.74, पृ.4 के मध्य की ज्ञान मुरली में भी परमपिता शिव ने घोषणा की थी कि "हठयोगी निवृत्तिमार्ग वाले सन्यासी कब प्रवृत्तिमार्ग वालों (गृहस्थियों) को राजयोग सिखा नहीं सकते।" फिर दुनियाभर में फैले ब्रह्माकुमारी आश्रमों में रहने वाली अविवाहित ब्रह्माकुमारियाँ, जिनके आध्यात्मिक माता-पिता अर्थात् ब्रह्मा-सरस्वती का निधन हो चुका है, वो गृहस्थियों को राजयोग कैसे सिखा सकती हैं?

सन् 1969 के पश्चात् साकार माता-पिता के रूप में परमपिता शिव की डायरैक्ट पालना न मिलने के कारण विवाहित ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ भी सन्यासियों की तरह जीवन व्यतीत करने लगे हैं, आपस में आत्मिक दृष्टि-वृत्ति रखने के स्थान पर एक-दूसरे को केवल मुख से भाई-बहन कहने लगे हैं तथा अपने घर-गृहस्थ की देखभाल करते हुए, आध्यात्मिक साधना और ईश्वरीय सेवा करने के स्थान पर आश्रमों में रहने वाली ब्रह्माकुमारियों की सेवा को अधिक महत्व देने लगे हैं; इसलिए आम दुनिया और खास भारत में ब्रह्माकुमारी संस्था की यह छवि बन गई है कि वो विवाहित व्यक्तियों को भाई-बहन बनाती हैं।

वास्तविकता यह है कि 5000 वर्ष के चतुर्युगी मनुष्य सृष्टि चक्र में सतयुग से कलियुग तक 84 जन्म लेते-लेते जब मनुष्यात्माएँ पूरी तरह से धर्म-भ्रष्ट और कर्म-भ्रष्ट बन जाती हैं, विवाह केवल भोग का साधन बन जाता है तथा कुंडली मिलने के बावजूद पति-पत्नी के संस्कार नहीं मिलते हैं और गृहस्थ रूपी स्वर्ग नर्क में बदल जाता है, तब इस कलियुगी नर्क को सतयुगी स्वर्ग बनाने के लिए स्वयं परमपिता परमात्मा शिव को दिव्य अवतरण लेना पड़ता है।

कलियुग तथा सतयुग के संधिकाल अर्थात् पुरुषोत्तम संगमयुग में निराकार परमपिता शिव दो साधारण व्यक्तियों के द्वारा एक अलौकिक परिवार की स्थापना करते हैं। जिस दम्पति को निमित्त बनाते हैं, उनके कर्तव्य के आधार पर उन्हें प्रजापिता तथा जगदम्बा कहा जाता है। निराकार

शिव प्रजापिता के शरीर में प्रवेश कर उनके मुख कमल से जिस निराले ज्ञान का उच्चारण करते हैं, उससे कई आत्माओं का तीसरा ज्ञान नेत्र खुलता है और वे परमपिता शिव की श्रीमत पर चलने वाले सच्चे ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण बनते हैं–जो अपने घर-गृहस्थ में रहते, मन-वचन-कर्म से पवित्रता को धारण करने का पुरुषार्थ करते हैं। इन्हें प्रजापिता ब्रह्माकुमार और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी (पी.बी.के.) भी कहा जाता है। (माउंट आबू के ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ अपने को सिर्फ बी.के. कहलाते हैं; क्योंकि निवृत्तिमार्ग का होने के कारण उन्हें अपने वर्तमान बाप परमपिता के प्रैक्टिकल पार्ट का परिचय ही नहीं है)। प्रजापिता और जगदम्बा की प्रैक्टिकल संतान होने के कारण ये आपस में भाई-बहन कहलाते हैं, चाहे कोई बालक, युवा, वृद्ध हो, विवाहित या अविवाहित हो। निराकार परमपिता शिव की संतान होने के कारण ये मनुष्यात्माएँ आपस में भाई-भाई होते हैं; क्योंकि आत्मा का कोई लिंग नहीं होता है; लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि किसी पति-पत्नी को मुख से एक-दूसरे को भाई या बहन कहकर बात करनी है। यह तो मन से समझने या महसूस करके पवित्र जीवन बिताने की बात है।

परमपिता शिव कहते हैं कि तुम मनुष्यात्माएँ ही इस मनुष्य सृष्टि चक्र के प्रारंभिक 21 जन्मों में अर्थात् सतयुग और त्रेतायुग में संपूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण संपन्न देवी-देवताएँ थीं। फिर पिछले 63 जन्मों में अर्थात् द्वापर और कलियुग में देहअभिमान के कारण और नश्वर इंद्रियों का सुख भोगते-भोगते सभी मनुष्यात्माएँ काले कोयले की तरह भ्रष्ट, विकारी और पतित बन गई हैं। अब फिर से सतयुगी, पवित्र, सुखी, दैवी स्वराज्य की स्थापना करने के लिए परमपिता शिव की श्रीमत है कि हम मनुष्यात्माओं को इस अंतिम चौरासीवें जन्म में घर-गृहस्थ में रहते हुए स्वयं को तथा औरों को भी एक अविनाशी आत्मा समझना है तथा इस बेहद के नाटक में अपनी-अपनी भूमिका निभाते हुए परमपिता परमात्मा को याद करना है और दैवी गुण धारण करने हैं। जैसे गृहस्थ जीवन में संपूर्ण सुखों का अनुभव करने से पहले कोई भी व्यक्ति विद्यार्थी के रूप में कई वर्षों तक पवित्र रहते हुए ज्ञान तथा कलाओं का अर्जन करता है, उसी प्रकार परमपिता शिव कहते हैं कि 84 जन्मों के इस मनुष्य सृष्टि चक्र में अब इस एक अंतिम जन्म में कुछ समय के लिए हम अपने इस नश्वर शरीर की इंद्रियों तथा मन पर नियंत्रण रखेंगे तथा दिव्य गुण धारण करेंगे तो हम इस जन्म सहित अगले 21 जन्मों के लिए संपूर्ण सुख-शांतिमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

गीता में भी लिखा हुआ है–काम महाशत्रु है। परमपिता शिव कहते हैं कि जब यह भारत सोने की चिड़िया थी तब प्रत्येक स्त्री और पुरुष का रज तथा वीर्य ऊर्ध्वगामी होता था, संतान की उत्पत्ति योगबल से श्रेष्ठ इंद्रियों द्वारा हुआ करती थी। ऐसे योगबल से उत्पन्न संतान मानसिक, शारीरिक और धन बल से परिपूर्ण हुआ करती थी। इस प्रकार योगबल से जन्म देने वाले माता-पिता और योगबल से जन्म लेने वाली संतान, दोनों ही दीर्घायु, स्वस्थ और चरित्रवान हुआ करते थे। जब इस धरती पर स्वर्ग था तब अखण्ड भारत में पवित्र देवी-देवताओं का राज्य था, जहाँ हर नारी को देवी तथा हर पुरुष को देव या आर्य (श्रेष्ठ) कहा जाता था। द्वापरयुग में जब अन्य धर्मों की स्थापना के साथ-साथ अन्य धर्मखण्ड भी समुद्रतल से उभरने लगे, तब भारत ने ही इन धर्मखण्डों में ज्ञान और संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया; किंतु कलियुग आते-आते स्वयं भारतवासी अन्य धर्मों और धारणाओं के प्रभाव में आ गए, भ्रष्ट इंद्रियों के भोग में लिप्त हो गए तथा अपने मूल देव रूप को भूल गए तथा पतन के गर्त में जा गिरे।

अब इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर सभी धर्मों की आत्माओं के परमपिता शिव इस धरती पर प्रजापिता और जगदम्बा अर्थात् आदिदेव-आदिदेवी/एडम-ईव/आदम-हव्वा के द्वारा अलौकिक दैवी परिवार "वसुधैव कुटुंबकम्" की प्रैक्टिकल में स्थापना कर रहे हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने भगवान की अवतरण भूमि उत्तर प्रदेश में महाभारत-प्रसिद्ध ग्राम कंपिला में रूहानी घर, रूहानी अस्पताल और रूहानी यूनिवर्सिटी अर्थात् आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की है। जो भी इस अंतिम चौरासीवें जन्म में घर-गृहस्थ में रहते हुए भी अल्पकालिक इंद्रियों के तुच्छ काग-विष्टा समान सुख का त्याग कर पवित्र बनेगा और बनाएगा, वही इस जन्म सहित 21 जन्मों के लिए अविनाशी सुख-शांतिमय दैवी स्वराज्य का सुख भोग सकता है। अभी नहीं तो कभी नहीं। ओमशान्ति।